रिकॉर्डः—हमें उन राहों पर चलना है..... ॐ पिताश्री 4/8/1964

ओमशांति। जब गीत बजता है तो बच्चे समझते हैं कि हमारे लिए उनमें भी ज्ञान है। अज्ञानी मनुष्यों के लिए अज्ञान है, ज्ञानी तू आत्मा के लिए ज्ञान है। ज्ञान के लिए ही रिकॉर्ड रखे हुए हैं। समझते हो, बरोबर माया के तूफानों में कब गिरना है, कब चढ़ना है। माया के तूफान ही गिराते हैं, फिर ईश्वर बाप चढ़ाते हैं अर्थात् गिरे हुए को ज्ञान संजीवनी बूटी देते हैं। अगर कोई काम के तूफान में आ जाते तो अ(न्दर) ही गिर जाते हैं। फिर तूफान क्रोध का भी लगता है तो गिरना होता है। यह गिरना और चढ़ना होता है। चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस। अब यह गीत सिवाय तुम्हारे और किसके साथ लग नहीं सकता। सन्यासियों से भी नहीं लग सकता। भल उन्हों के पास भी क(च्चे) सन्यासी होंगे; परन्तु आखरीन कोई मंज़िल नहीं है। तुम्हारी तो ज़बरदस्त, बड़े ते बड़ी मंज़िल है। करके वेद—शास्त्र पढ़कर विद्वान बन जाते। बाकी राजाई आदि की कोई मंज़िल नहीं। इसमें तो बड़ी ऊँच मंज़िल है। बच्चे जानते हैं, बेहद का बापदादा पढ़ाते हैं, मम्मा भी पढ़ाती है, फिर बच्चे भी पढ़ाते हैं। तुम हो डाडे पौत्रे। अमृतसर में डाडे पौत्रे होते हैं जो गद्दी पर बैठते हैं। गुरुनानक का बच्चा फलाना, फिर उनका बच्चा फलाना..... ऐसे डाडे पौत्रे होते हैं। फिर कहेंगे, यह सातवीं पीढ़ी, यह दसवीं पीढ़ी है। तुम समझते हो, सतयुग में भी पीढ़ी चलती है। देवताओं की पीढ़ी पहली पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी....। यहाँ फिर तुम्हारी पीढ़ियाँ नहीं। एक डाडा, एक बाबा, एक मम्मा और बच्चे—बच्चियाँ, ब(स)। डाडे पौत्रे से जास्ती आगे कुछ नहीं कहेंगे। अब यह याद करना तो अ.... है— हम बी०के०कुमारियाँ हैं। ब्रह्मा हुआ हमारा बाबा। डाडा है शिव। उनसे मिल्कियत मिलनी है। कितनी सहज बात है। हम डाडे—पौत्रे, बी०के०कुमारियाँ हैं। ब्रह्मा एक ही बच्चा है शिव का। ऐसे नहीं कहेंगे, हम विष्णु कुमारी अथवा शंकर कुमारी हैं। प्रजापिता, शंकर को वा विष्णु को नहीं कहेंगे। प्रजापिता एक ही ब्रह्मा को कहा जाता। बाबा बहुत सहज समझाते हैं। ब्रह्मा है शिव का बच्चा। शिव है स्वर्ग का रचयिता, वर्सा देने वाला। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा बी०के०कुमारियों को कहते हैं कि मुझे याद करते रहो। ब्रह्मा एक लाडला बच्चा शिव का है। तो एक डाडा निराकार, एक उनका बच्चा साकार प्रजापिता ब्रह्मा। फिर उनकी हैं बी०के०कुमारियाँ। तुम बी०के० बने ही हो शिव से वर्सा लेने लिए।

शिवबाबा कहते हैं, ऐसे–2 तुम कोई (को) समझाओ। याद ज़रूर शिवबाबा को करना है, जिनसे स्वर्ग का वर्सा मिलता है। और कोई को याद करेंगे तो नर्क का वर्सा मिलेगा। ये तो समझ की बात है, वर्सा बाप से (न)हीं, डाडे से मिलता है। स्वर्ग का रचियता, ज्ञान दाता वो है। शिवबाबा सुनाते हैं ब्रह्मा द्वारा। फिर ये ब्रह्मा भी सुन लेते हैं। ब्रह्मा की फिर पहली–2 बच्ची सरस्वती गाई हुई है। ब्रह्माकुमारी सरस्वती जगदम्बा कितनी गाई हुई है। ब्रह्मा से भी जास्ती शिवबाबा से वर्सा ले(ती) है; इसलिए पहले ल० फिर ना० गाया जाता। तुम जानते हो, हम जगदम्बा और जगतपिता के बच्चे ठहरे, तो क्यों न डाडा से वर्सा ले लेवें। हम ..... बी०के०कुमारियाँ, डाडा पौत्रे–पौत्रियाँ हैं, बस। दूसरी–तीसरी पीढ़ी नहीं है। परपौत्रे, तरपौत्रे कुछ नहीं। तो डाडा को कौन न याद करेगा? बी०के० कह(लाए) और डाडा को याद न करे, उनको कितना मूर्ख कहेंगे। हमारे पास ऐसे मूर्ख भी हैं, जो डाडा को याद नहीं करते हैं। जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। तुम कोई को भी समझा सकते हो, शिव प०पि०प० स्वर्ग का रचयिता है। बरोबर रचयिते हैं ब्रह्मा द्वारा। फिर बी०के०कुमारियों को ब्रह्मा द्वारा कहते हैं कि मुझे और वर्से(स्वर्ग) को याद करो। देह के सब सम्बंधों को भूल जाओ। कहा जाता है ना– आप मुये मर गई दुनियाँ। आत्मा शरीर से अलग हो जाती है तो कुछ भी नहीं रहता। देह का अभिमान निकल जाता है। हम बाबा के पास जाते हैं, फिर हम गौरा बनेंगे। अभी श्याम हैं। श्याम और सुन्दर बनने का यह नाटक है। आत्मा प्योर हसीन बनती है। अभी तुम्हारी आत्मा आ(यरन) एज्ड बन गई है, तो शरीर भी ऐसे हैं। सतयुग में तुम गौरे थे। एक हसीन मुसाफिर आते हैं गौरा बनाने। उनकी आत्मा तो सदैव गोरी है। कब खाद नहीं पड़ती है; क्योंकि वो जन्म–मरण में नहीं आते हैं। कितना सहज कर समझाते हैं, फिर भी ऐसे डाडे को भूल कर फारकती दे देते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं– महान ते महान मूर्ख और फिर सयाने ते सयाने देखने हो तो यहाँ देखो। मूर्ख भी ऐसे हैं जो इतनी सहज दो बातें नहीं समझ सकते। सिर्फ समझना है हम आत्मा हैं। वो निराकार परमात्मा हमारा डाडा है। यह प्रजापिता ब्रह्मा तो नामी–ग्रामी है। उन द्वारा शिवबाबा वर्सा देते हैं। बी०के० को छोड़ा, डाडे को भी छोड़ा तो वर्सा खतम हो जावेगा। बाबा कितना सहज करके समझाते हैं। हम हैं बी०के०कुमारियाँ। ब्र०वि०शं० हैं सूक्ष्मवतनवासी। उसमें भी ब्रह्मा को प्रजापिता कहते। सूक्ष्मवतन में तो मनुष्य सृष्टि नहीं रची जाती। शंकर को, विष्णु को प्रजापिता नहीं कह सकते। प्रजापिता तो ज़रूर यहाँ होगा। ब्रह्मा (के) मुखकमल से ब्राह्मण निकले। ब्राह्मणों से पूछो, तुम किसकी वंशावली हैं? यह सिर्फ गायन हो गया है। ऐसे है नहीं। अभी तुम जानते हो प०पि०प० ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय धर्म स्थापन करते हैं। सो तो करेंगे संगमयुग पर। संगमयुग में ब्राह्मण ज़रूर चाहिए। कलियुग अन्त में हैं शूद्र। तुम बच्चों को कितना अच्छी रीति समझाया जाता है। श्रीमत तो मशहूर है। श्रीमत भगवत गीता। उनसे (क्या) बनना होता है? श्री ने ज्ञान सुनाया होगा और श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाया होगा। अभी तुम प्रैक्टिकल में बी०के०कुमारी बने हो। तुम कहते हो– बापदादा, हम कल्प पहले भी आप से मिले थे, हम डाडे से अपना वर्सा लेने लिए आए थे। अच्छा, उ(स)से क्या बने थे? सूर्यवंशी वा चंद्रवंशी। ना० को वरा था या राम को? कहते हैं– बाबा, हम कोई इतने मूर्ख थोड़े ही हैं, जो राम को वरेंगे। हम तो श्री ना० को वरेंगे; परन्तु फिर भूल जाते हैं। जो इतना लायक बनाते उनको भूल जाते हैं। डाडे को, बाप को (भ)ल कोई न भूले, झट फारकती दे देते, याद नहीं करते। ज्ञान के दो अक्षर धारण नहीं करते। हम सत्गुरु पौत्रे अथवा डाडे पौत्रे हैं। उनसे (क्या) लेते हैं पुरुषार्थ से! लौकिक बाप का वर्सा अथवा प्रोपर्टी तो बाँटी जाती है। यहाँ यह बाँटने की चीज़ नहीं। इसमें तो पुरुषार्थ करना पड़ता है। कोई मून आदि में प्लॉट खड़ी नहीं करता है। यहाँ तो राजाई के मालिक बनते हैं। पार्ट तो यहाँ ही लेना है। मून आदि में नहीं जाना है। इसको साइंस घमंड कहा जाता है। अति घमंड में जाने से विनाश को प्राप्त करते हैं। क्या–2 निकल पड़ा है। हज़ारों–लाखों माइल तक जाते हैं। उन्हों को मालूम पड़ता है अभी यह कहाँ तक प(हुँ)चा है। ऊपर चंद्रमा में क्या है। कहते हैं–

चंद्रमा में हिट(सिफ्ट) करेंगे; क्योंकि चंद्रमा तो शीतल है ना। सूर्य के आगे जाने से तप जावेंगे। कितना साइंस का घमंड है। नाम भी रखा है रॉकेट। बाबा ने समझाया है– आत्मा सबसे बड़ी रॉकेट है। है तो एक ही बिंदी, उसका क्या वजन होगा! बिन्दी में कितनी सारी नॉलेज है– एक सेकेण्ड में कहाँ से कहाँ उड़ जाती है। बाबा को याद किया और सेकेण्ड में उड़े। ये तो शुरूड बुद्धि ही समझ कर समझाय सकते हैं और समझाएँगे। शिवबाबा भी बिन्दी है। लिंगम स्वरूप कहने से सन्यासी आदि कहेंगे, इतनी बड़ी आत्मा तो होती नहीं, न परमात्मा ऐसे होता। वो फिर कहते हैं परमात्मा तो ब्रह्म है। कुछ भी समझ न सके। जब तक कोई सन्मुख न आए तब तक परमात्मा के नाम–रूप आदि को कोई समझ न सके। हम भल शिवबाबा का चित्र दिखाते हैं; परन्तु ऐसा है नहीं। वो तो बिन्दी है; परन्तु बिंदी की पूजा कैसे करेंगे, फूल आदि कैसे चढ़ाएँगे! तो ये भक्तिमार्ग चला आया है। पूजा के लिए मंदिर में बिंदी रख न सके। अच्छा, बाबा कहते हैं– किसकी बुद्धि में ये ज्ञान बैठे, फिर भी ये तो समझ सकते हो न, हम बी०के०कुमारी हैं, डाडा पौत्रे हैं। ऊँच ते ऊँच भगवान शिव है गॉड फादर। उसकी रचना को तो गॉड फादर नहीं कहेंगे। हम हैं उनके पौत्रे। वो कहते हैं– मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। तुम भी जानते हो हम अभी तमोप्रधान, साँवरे हैं। बाबा से सतोप्रधान, गौरे बन रहे हैं। राम भी गौरा था; परन्तु कृष्ण से दो कला कम। वो भी अब काला हो गया है। कृष्ण के लिए तो कहते– सर्प ने डसा; इसलिए काला हुआ। अ(च्छा), राम क्यों काला हुआ? क्या उन(को) इतनी भी ताकत न थी जो अपनी स्त्री को ब(चा) सके? वास्तव में बात कुछ है नहीं। यह तो काम चिक्षा पर च(ढ़ने) से काले बन जाते हैं। श(या)म और सुन्दर बनते हैं। अभी फिर सतोप्रधान बनने लिए बाप को याद करना है। एक मुसाफिर कितने को हसीना बनाते हैं, विश्व के मालिक बनाते हैं। सिर्फ कहते हैं– मुझ बाप को याद करो, नहीं तो वर्सा कैसे मिलेगा! विकर्म विनाश करने लिए योग–अग्नि चाहिए। घड़ी–2 याद करना है। कई समझते हैं– हम बच्चे तो हैं ना। सारा दिन याद नहीं करते, विकर्म विनाश नहीं होते, खुशी का पारा नहीं चढ़ता। 20/25 बरस वालों को भी यह बात बुद्धि में नहीं बैठती, भूल जाते हैं। फिर पुरानी दुनिया में जाकर तकदीर को लकीर लगा देते हैं। माँ–बाप की गोद में आने से ही तकदीर (शुरुड़) होती है। मम्मा–बाबा कहने से स्वर्ग के हकदार तो बने ना। प्रजा भी कहते हैं ना 'हमारा हिन्दुस्तान सबसे ऊँचा'। अरे, सबसे ऊँच होता तो (कर्जा) क्यों उठाते? कंगाल क्यों बनते? यहाँ से बहुत धन ले गए हैं। कारखाने से पैदाइश होती है ना। कारखाना न निकाले तो कोई को नौकरी न मिल सके। नौकरी न मिले तो पालना कैसे करे? दुखी हो पड़े। इसलिए भारत के लिए कितनी युक्ति रची हुई है। बच्चों को बहुत दुख न हो, इसके लिए यह युक्ति है। यहाँ से कितने बाहर जाते हैं नौकरी करने; क्योंकि वहाँ पैसे बहुत मिलते हैं। बाप कहते हैं– हमारा तो काँटों पर भी प्यार है। सब पतितों को आए पावन करता हूँ। काँटों पर भी प्यार है, तो काँटे से जो फूल बनते हैं उन पर भी प्यार है। ड्रामा अनुसार सबको सद्गति देता हूँ। सबका सद्गति दाता राम। तो सबका प्यारा हुआ ना। उसमें काँटे भी हैं, फूल भी हैं। कायदे अनुसार स्वर्ग की स्थापना हो(नी) है तो इसके लिए लायक भी बनाते हैं। कहते हैं ना– पतित–पावन आओ, आकर पावन बनाओ। अभी तुम जानते हो पतित–पावन बाप आया है। भारत को खास और दुनिया को आम पावन बनाते हैं। सर्वो(दया) लीडर नाम रखाया है। यह भी अपन पर नाम ऐसे रखाना है जैसे श्री–श्री 108 कहलाते हैं। सर्वो माना सब। कोई भी मनुष्य तो सर्व की सद्गति कर न सके। कितने गपोड़े लगाते हैं। अच्छा, मम्मा क..... भरो। मम्मा, बापदादा माँ की सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ